Unit 2: उपभोक्ता व्यवहार और मांग

उपभोक्ता संतुलन- उपयोगिता की अवधारणा

उपभोक्ता(Consumer) कौन है?

उपभोक्ता एक आर्थिक एजेंट है जो उपभोग की क्रिया द्वारा अपनी किसी आवश्यकता विशेष की संतुष्टि करता है।

इसके अंतर्गत

व्यक्ति, समूह, परिवार अथवा संस्था को सम्मिलित किया जाता है

उपभोक्ता व्यवहार (Consumer's Behaviour)

उपभोक्ता व्यवहार का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसमें उपभोक्ता यह **चुनाव** करता है कि वह अपनी **सीमित आय** को विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं पर किस प्रकार **व्यय** करें कि उसे **अधिकतम उपयोगिता** प्राप्त हो जाए।

उपभोक्ता संतुलन (Consumer's Equilibrium)

असीमित आवश्यकताओं तथा सीमित साधनों के होने पर एक उपभोक्ता का उद्देश्य अपने व्यय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना होता है और जब वह अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर लेता है तब उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में होता है।

उपयोगिता/ तुष्टिगुण (Utility)

किसी वस्तु या सेवा में निहित वहाँ शक्ति या क्षमता जिससे किसी उपभोक्ता की आवश्यकता की संतुष्टि होती है, उपयोगिता कहते हैं।

उपयोगिता की विशेषताएँ (Features of Utility)

- उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा है।
- उपयोगिता व्यक्ति परक होती है।
- उपयोगिता का विचार सापेक्षिक है।
- उपयोगिता नैतिक सिद्धांतों से प्रभावित नहीं होती।
- उपयोगिता का अर्थ अनुमानित संतुष्टि से होता है।

उपयोगिता से संबंधित विचारधारायें

गणनावाचक दृष्टिकोण	क्रमवाचक दृष्टिकोण
गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण	तटस्थता-वक्र विश्लेषण
मार्शल	हिक्स एवं ऐलन
उपयोगिता को मापा जा सकता है	उपयोगिता को मापा नहीं जा सकता है

गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण (Cardinal Utility Analysis)

इसे *मार्शल* *का उपयोगिता विश्लेषण या* *सीमांत उपयोगिता विश्लेषण* के नाम से भी जाना जाता है।

प्रो. मार्शल के अनुसार उपयोगिता को मुद्रा के माध्यम से मापा जा सकता है।

वस्तु के लिए दी जाने वाली कीमत ही उपयोगिता की गणना का आधार होता है अर्थात मार्शल ने उपयोगिता को गणनावाचक संख्याओं 1,2,3...... आदि द्वारा संबोधित किया।

उपयोगिता की धारणाएं (Concepts of Utility)

सीमांत उपयोगिता	कुल उपयोगिता
Marginal Utility	Total Utility
MU	TU

सीमांत उपयोगिता (Marginal Utility)

सीमांत शब्द का अर्थ है - एक अतिरिक्त।

किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से जो अतिरिक्त उपयोगिता मिलती है उसे सीमांत उपयोगिता कहते हैं।

MU = TUn – TUn-1

कुल उपयोगिता (Total Utility)

उपभोग की सभी इकाइयों के उपभोग से उपभोक्ता को जो उपयोगिता प्राप्त होती है, उसे कुल उपयोगिता कहते हैं।

कुल उपयोगिता उपभोग की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त सीमांत उपयोगिताओं का योग होती है।

वस्तु की इकाइयां	सीमांत उपयोगिता (MU)	कुल उपयोगिता (TU)
1	40	40
2	30	70
3	20	90
4	10	100
5	0	100
6	-10	90
7	-20	70

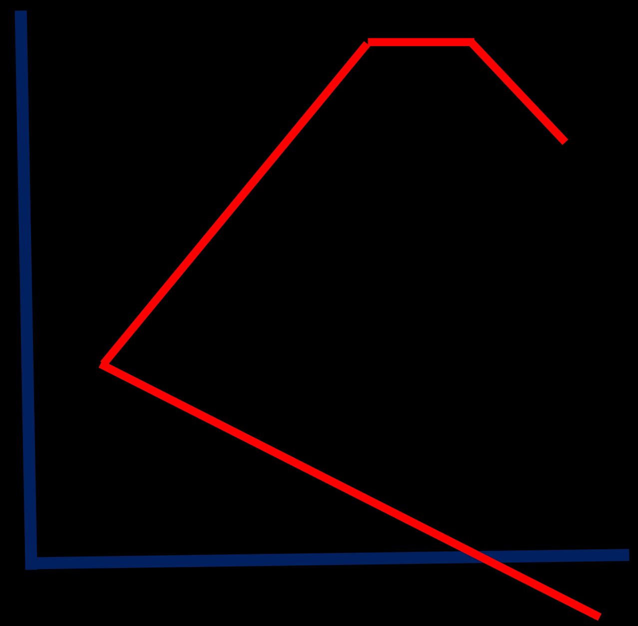

सीमांत उपयोगिता तथा कुल उपयोगिता से संबंध

1. जब सीमांत उपयोगिता धनात्मक है। चाहे वो घट रही हो तब कुल उपयोगिता बढ़ती है।
2. जब सीमांत उपयोगिता शून्य हो जाती है, तब की उपयोगिता अधिकतम होती है।
3. जब सीमांत उपयोगिता ऋणात्मक होती है तब कुल उपयोगिता घटने लगती है।

ह्रासमान / घटती सीमांत उपयोगिता का नियम

(Law of Diminishing Marginal Utility)

इसे **आवश्यकता संतुष्टि का नियम** भी कहते हैं।

यह उपभोक्ता एक महत्वपूर्ण नियम है जो दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित होने के कारण ***सर्वमान्य एवं सार्वभौमिक*** है।

इस नियम का सर्वप्रथम उल्लेख ***ऑस्ट्रियन*** अर्थशास्त्री ***एच एच गोसेन*** ने किया था। अतः इसे **गोसेन का प्रथम नियम** भी कहा जाता है।

इस नियम के अनुसार,

जब किसी वस्तु की मानक इकाइयों का लगातार अधिक से अधिक उपभोग किया जाता है, तब प्रत्येक इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है। यहाँ सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के संबंध में लागू होता है।

घटती सीमांत उपयोगिता नियम के लागू होने की आवश्यकता शर्तें:

1. उपभोग की जाने वाली वस्तु की सभी इकाइयों या गुण तथा परिणाम में समान होनी चाहिए।
2. उपभोग निरंतर क्रम में होना चाहिए।
3. इस वस्तु की इकाई का आकार पर्याप्त होना चाहिए।
4. उपभोक्ता विवेकशील होना चाहिए।
5. उपभोक्ता की आय रुचि, फैशन और उपभोग प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

सम सीमांत उपयोगिता का नियम (Law of Equi-Marginal Utility)

अथवा

सीमांत उपयोगिता के प्रयोग द्वारा उपभोक्ता का संतुलन

सम सीमांत उपयोगिता का नियम विश्लेषण में ***उपभोक्ता का संतुलन*** स्पष्ट करता है।

इस नियम को ***गोसेन का दूसरा नियम*** भी कहा जाता है।

इस सिद्धांत के अनुसार 'एक उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार व्यय करेगा कि प्रत्येक वस्तु पर खर्च की गई रूचियों की अंतिम इकाई से समान सीमांत उपयोगिता प्राप्त होगी'।

उपभोक्ता संतुलन का निर्धारण (Determination of Consumer's Equilibrium)

एक वस्तु की स्थिति में

जब एक उपभोक्ता अपनी आय से केवल एक वस्तु को ही खरीदना चाहता है, तो उसे ध्यान में रखना चाहिए कि उस पर सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम लागू होता है।

अर्थात वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से प्राप्त होने वाली उपयोगिता बढ़ती जाती है। जबकि मुद्रा की उपयोगिता स्थिर रहती है।

इस प्रकार एक विवेकशील उपभोक्ता किसी वस्तु का उपभोग उस सीमा तक करेगा जहाँ उस वस्तु की अंतिम इकाई से प्राप्त **सीमांत उपयोगिता** उस वस्तु की कीमत के रूप में दी जाने वाली **मुद्रा की उपयोगिता** के बराबर हो जाती है।

इस प्रकार अपने व्यय का समायोजन करने के लिए उपभोक्ताओं को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है और वो संतुलन अवस्था में होता है।

उपभोक्ता संतुलन = **वस्तु X की सीमांत उपयोगिता** = वस्तु X की मुद्रा कीमत का उपयोगिता मूल्य

MUx = Px

मुद्रा की सीमांत उपयोगिता (Marginal Utility of Money):

यदि हम एक वस्तु की यूटिल के रूप में सीमांत उपयोगिता को रुपए की सीमांत उपयोगिता से विभाजित कर दे। तो हम एक वस्तु की मुद्रा के रूप में सीमांत उपयोगिता ज्ञात कर सकते हैं।

मुद्रा के रूप में MUx = यूटील के रूप में MUx / रुपए की MU

उदाहरण:

X वस्तु की इकाइयां	MUx	Px	प्राप्त उपयोगिता का अंतर
1	40	20	20
2	35	20	15
3	30	20	10
4	25	20	5
5	20	20	0
6	15	20	-5

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND **SHARE** THE CLASS LINK

SUBSCRIBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

WhatsApp/ 7830010683

FOLLOW ME ON INSTAGRAM/theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / Nakul Dhali